कैम्पस कनेक्ट

राम लाल आनंद महाविद्यालय का मासिक ई-न्यूज़लेटर

हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग का प्रकाशन | नई दिल्ली, मई 2025 | वर्ष 3, अंक 19, पृष्ठ 4





राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) और भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में 'प्रवासी साहित्य : पहचान और संवेदना' विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में मौजूद लोग (बाएं), महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, चेयरमैन संतोष तनेजा और उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि प्रो. रामनरेश मिश्र का हिंदी साहित्य परिषद के पदाधिकारियों ने स्वागत किया (दाएं)।

हमारे पास समय है, अपनी संस्कृति बचा सकते हैं...

राम लाल आनंद महाविद्यालय में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के विभिन्न सत्रों में विद्वानों ने रखे विचार और पढ़े गए शोध पत्र

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय में दो दिन 'प्रवासी साहित्य : पहचान और संवेदना' विषय पर विशेषज्ञों ने मंथन किया। गिरिमिटिया किसे कहा जाता है, भारत से वे किन देशों में भेजे गए, उनके साथ वहां कैसा सुलूक किया गया, उस सुलूक को कैसे दर्ज किया गया, किन लोगों ने दर्ज किया, उसे प्रवासी साहित्य क्यों कहा गया, उसकी यात्रा कैसी रही...जैसे अनेक प्रश्नों पर विद्वान वक्ताओं ने विचार रखे। सात सत्रों में 21–22 मार्च को हुई राष्ट्रीय संगोष्ठी में 22 विद्वानों ने अपनी बात रखी तो तकनीकी सत्रों में शोधार्थियों ने शोध पत्र पढ़े।

भारतीय सामाजिक विज्ञान अनुसंधान परिषद के सहयोग से हुए इस आयोजन के उद्घाटन सत्र में मुख्य वक्ता महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय में रह चुके प्रो. रामनरेश मिश्र ने कहा कि साहित्य का आधार भाषा है। हिंदी भारतीय संस्कृति की संवाहिका है। यहां व्यक्ति, व्यक्ति से जुड़ता है। पूरा परिवार इकाई बन जाता है। प्रवासी साहित्य में भारत के संस्कार गुंथे हुए हैं। वहां जाकर राष्ट्रीयता का भाव प्रबल हो जाता है। महाविद्यालय के गवर्निंग बॉडी के अध्यक्ष संतोष तनेजा ने कहा कि भाषा व्यवहार में नहीं रहेगी तो आप उसे बचा नहीं पाएंगे। भारतीयता को रोक नहीं पाएंगे। दक्षिण भारत के राज्यों का उदाहरण देते हुए उन्होंने भाषा के प्रति लगाव की वकालत की। कहा कि आधुनिक दिमाग से बनिए, पश्चिम की नकल करके नहीं। प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अतिथियों का स्वागत करते हुए भारत के विकास में प्रवासियों के योगदान को रेखांकित करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति की जड़ें कितनी मजबूत हैं, उसी पर प्रकाश डालने के लिए यह संगोष्ठी की जा रही है। गोष्ठी के सहसंयोजक प्रो. संजय कुमार शर्मा ने विषय की रूपरेखा रखते हुए कहा कि एक प्रवासी के हृदय का मर्म एक लेखक अच्छे से समझ सकता है। उसी के अनेक आयामों पर इस संगोष्ठी में बात होगी।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र 'प्रवासी साहित्य में संवेदना और मानवीय मूल्य' में जवाहर लाल नेहरू विवि के भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. सुधीर प्रताप सिंह ने कहा कि प्रवासी कौन है, मूल रूप से इस अवधारणा को समझना होगा। उन्होंने 1833, 1933 और 2025 का जिक्र करते हुए बताया कि युग बदल गया है। तीनों युग में अलग–अलग तरह की पीड़ा रही है। इसलिए संवेदना के स्तर पर चीजों को देखना होगा। दिल्ली विवि के हिंदी विभाग में रहे प्रो. पूरन चंद टंडन का कहना था कि एक छूट जाने की पीड़ा है, दूसरी छोड़ देने की पीड़ा है। दोनों की संवेदना में अंतर है। उन्होंने प्रवासी साहित्य की शक्ति और सीमा को रेखांकित किया।

दूसरे सत्र 'प्रवासी लेखकों द्वारा भाषा एवं साहित्य का संरक्षण' में प्रवासी अध्येता डॉ. बरुण कुमार ने कहा कि वह समय पीड़ा का है। विस्थापन का है। इसके बावजूद अपनी संस्कृति से जुड़े रहने का है। जामिया मिल्लिया विवि के प्रो. एमपी शर्मा ने पोलैण्ड और साउथ कोरिया में आठ साल के अपने प्रवास को केन्द्र में रखकर बात की। तीसरे सत्र 'प्रवासी साहित्य में मातृभूमि का भावनात्मक और विचारात्मक विश्लेषण' में मुख्य वक्ता रहे डॉ. सतीश कुमार शास्त्री ने फिजी, मॉरीशस के प्रवासियों की संस्कृति, खान–पान, रहन–सहन, पूजा–पाठ आदि से अवगत कराया। चौधरी चरण सिंह विवि मेरठ के प्रो. नवीन चंद लोहानी ने विश्वविद्यालयों के हिंदी पाठ्यक्रमों में प्रवासी साहित्य की उपस्थिति पर विस्तार से प्रकाश डाला।

चौथे सत्र 'वैश्वीकरण और प्रवासी साहित्य का स्वरूप' में हिंदी अकादमी दिल्ली के ऋषि कुमार शर्मा ने कहा कि जिस दुनिया में हम जी रहे हैं, उसमें प्रवासी पहले जी चुके हैं। अब वह ऊब चुके हें। वह वापस अपनी संस्कृति को बचाने आ रहे हैं, इस बात को समझना होगा। मोहनलाल सुखाड़िया विवि के डॉ. नवीन नंदवाना ने कहा कि पौधा तब तक लहलहाता है जब तक वह जड़ों से जुड़ा है। पहले विदेशी तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला पढ़ने आते थे, आज उल्टा हो रहा है।

पांचवें सत्र 'सामुदायिक जुड़ाव : भाषायी और सांस्कृतिक विमर्श' में डॉ. भीमराव अम्बेडकर विवि दिल्ली के प्रो. सत्यकेतु सांकृत ने कहा कि प्रवासी साहित्य की विशेषता है कि उसमें कोई जन्मना नहीं होता है। साहित्य प्रवासी है, लेकिन साहित्यकार प्रवासी नहीं है। इस संबंध में उन्होंने गिरिराज किशोर और प्रभा खेतान का उल्लेख किया। समापन सत्र में वैश्विक हिंदी परिवार के अनिल जोशी ने बताया कि वहां परिवार और संबंध बचे हुए हैं। उनसे सीखना चाहिए। उन्होंने वहां की नकारात्मक चीजों को भी रेखांकित किया।

कुल सात सत्रों में हुई संगोष्ठी के तकनीकी सत्रों में डॉ. मानवेशनाथ दास, डॉ. मंजू गौड़, डॉ. दीनदयाल, आदित्य यादव, सूर्यप्रकाश सेमवाल, जितेन्द्र कुमार, मिनाली, अटल तिवारी समेत कई शोधार्थियों ने शोध पत्र पढ़े, जिस पर विशेषज्ञों ने सुझाव दिए। संगोष्ठी के संयोजक रहे डॉ. राजेश कुमार गौतम ने अंतिम सत्र में प्राचार्य के सहयोग को विशेष रूप से रेखांकित कर सभी के सहयोग के लिए आभार जताया। सभी सत्रों की रिपोर्ट डॉ. रोशनलाल मीणा ने प्रस्तुत की। पूरे आयोजन में हिंदी विभाग की अध्यक्ष प्रो. श्रुति आनंद, प्रो. राकेश कुमार, संगोष्ठी की सह–संयोजिका प्रो. अर्चना गौड़, डॉ. सुरेन्द्र कुमार, डॉ. मानवेशनाथ दास, डॉ. रीना कसाना, डॉ. साधना, डॉ. ऐनी रे, हिंदी पत्रकारिता के डॉ. अटल तिवारी, डॉ. प्रदीप कुमार ने अलग–अलग जिम्मेदारियों का निर्वहन किया। दोनों दिन बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी, हिंदी साहित्य परिषद सहित पत्रकारिता के विद्यार्थियों ने मेहनत कर संगोष्ठी को सफल बनाया।

पहला दिन | प्रवासी साहित्य : पहचान और संवेदना | दूसरा दिन

- ***उद्घाटन सत्र : प्रवासी साहित्य में सांस्कृतिक संघर्ष***
  अध्यक्ष : संतोष तनेजा, वक्ता : प्रो. रामनरेश मिश्र, सानिध्य : प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, विषय उद्बोधन : प्रो. संजय कुमार शर्मा, संचालन : प्रो. अर्चना गौड़, धन्यवाद : प्रो. राकेश कुमार
- ***प्रथम सत्र : प्रवासी साहित्य में संवेदना और मानवीय मूल्य***
  अध्यक्ष : प्रो. पूरन चन्द टंडन, वक्ता : प्रो. सुधीर प्रताप सिंह, संचालन : प्रो. राकेश कुमार, धन्यवाद : डॉ. सुरेन्द्र कुमार
- ***द्वितीय सत्र :प्रवासी लेखकों द्वारा भाषा एवं साहित्य का संरक्षण***
  अध्यक्ष : प्रो. एम.पी. शर्मा, वक्ता : डॉ. बरुण कुमार, संचालन : प्रो. श्रुति आनंद, धन्यवाद : डॉ. मानवेश नाथ दास
- ***तृतीय सत्र : प्रवासी साहित्य में मातृभूमि का भावनात्मक और विचारात्मक विश्लेषण***
  अध्यक्ष : प्रो. नवीन चंद लोहानी, वक्ता : डॉ. सतीश कुमार शास्त्री, संचालन : डॉ. रोशनलाल, धन्यवाद : डॉ. अटल तिवारी
- ***चतुर्थ सत्र : वैश्वीकरण और प्रवासी साहित्य का स्वरूप***
  अध्यक्ष : डॉ. नवीन नंदवाना, वक्ता : डॉ. ऋषि कुमार शर्मा, संचालन : डॉ. सुरेन्द्र कुमार, धन्यवाद : डॉ. प्रदीप कुमार
- ***पंचम : सामुदायिक जुड़ाव : भाषायी और सांस्कृतिक संदर्भ***
  अध्यक्ष : प्रो. सत्यकेतु सांकृत, वक्ता : डॉ. नवीन नंदवाना, संचालन : प्रो. संजय शर्मा, धन्यवाद : डॉ. मानवेश नाथ दास

: समापन सत्र :

वक्ता : अनिल जोशी, स्वागत : प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, रिपोर्ट : डॉ. रोशनलाल मीणा, संचालन : डॉ. राजेश कुमार गौतम, धन्यवाद : प्रो. अर्चना गौड़



संगोष्ठी के दूसरे सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. एमपी शर्मा और डॉ. बरुण कुमार के साथ शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी।

जीवन में परिवर्तन जरूरी है

जीवन का हर मोड़ कुछ नया सिखाने आता है। हर अनुभव, हर जिम्मेदारी हमें खुद को और बेहतर बनाने का अवसर देती है। जब मैं 'कैम्पस कनेक्ट' का सम्पादक बना तो यह सफर केवल लेखन या रिपोर्टिंग का नहीं रहा, बल्कि खुद को रोज थोड़ा–थोड़ा गढ़ने का सिलसिला बन गया।

आज के डिजिटल युग में जहां तकनीक ने हमें तेज और कुशल बनाया है, वहीं इसने कुछ नई चुनौतियां भी सामने रखी हैं। जैसे–कुछ विद्यार्थियों का चैट जीपीटी जैसी एआई का सहारा लेकर खबरें बना देना। ऐसी खबरों में मानव अनुभव, संदर्भ की समझ और भावनात्मक जुड़ाव की कमी होती है। शब्द होते हैं, पर आत्मा नहीं होती। यही वह बिंदु है, जहां मानव संवाददाता की भूमिका और भी अहम हो जाती है।



राहुल कुमार गुप्ता
संपादक

एक संपादक के रूप में यह समझना मेरे लिए बेहद महत्वपूर्ण था कि बदलाव केवल बाहरी नहीं भीतर से सोच और दृष्टिकोण में भी होना चाहिए। संवाददाताओं की खबरों को केवल पढ़ना ही पर्याप्त नहीं होता बल्कि उनके शब्दों के पीछे छिपी मेहनत को समझना भी उतना ही जरूरी होता है। जब हम सचमुच सुनना सीख जाते हैं तो संवाद बेहतर होता है। परिणाम बेहतर होते हैं।

इस अनुभव के दौरान मुझे यह महसूस हुआ कि एक अच्छे संपादन की नींव सार्थक संवाद में होती है। जब संवाद खुला और लचीला होता है तभी वह रचनात्मकता को दिशा देता है। बदलाव को अपनाने की सहजता ही एक बेहतर परिणाम की ओर ले जाती है। 'कैम्पस कनेक्ट' का यह अंक भी इसी साझा प्रयास, समर्पण और सतत सीखने की यात्रा का परिणाम है, जिसमें हम सभी ने मिलकर अपने अनुभवों, विचारों और दृष्टिकोणों को आकार दिया है।

आखिर में इतना ही कहूंगा कि तकनीक कितनी भी विकसित क्यों न हो जाए, सुनने की कला और बदलाव के लिए तैयार मन हमेशा हमें सबसे आगे रखेगा। यही दो गुण हमें न केवल एक बेहतर पत्रकार बनाते हैं बल्कि हमें एक संवेदनशील, समझदार और मानवीय दृष्टिकोण से समृद्ध इंसान बनने में भी मदद करते हैं।

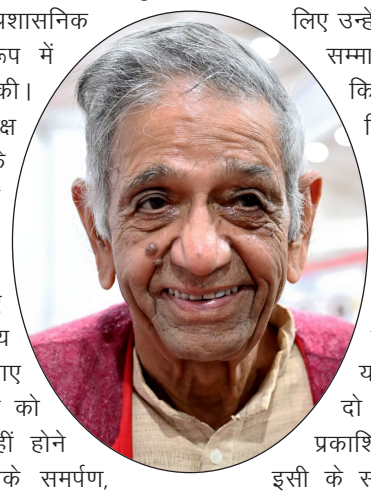
आकाशदीप से सम्मानित हुए गोविंद मिश्र

खुशी वशिष्ठ

नई दिल्ली। हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में अपना विशिष्ट योगदान देने वाले वरिष्ठ कथाकार, उपन्यासकार और कवि गोविंद मिश्र को वर्ष 2025 के अमर उजाला शब्द सम्मान के सर्वोच्च पुरस्कार आकाशदीप से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हें उनके समग्र साहित्यिक अवदान और हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति आजीवन समर्पण के लिए प्रदान किया गया। समारोह का आयोजन राजधानी दिल्ली में किया गया, जिसमें देश भर से साहित्य, पत्रकारिता और कला क्षेत्र से जुड़ी अनेक प्रतिष्ठित हस्तियां उपस्थित रहीं।

गोविंद मिश्र का रचना संसार हिंदी साहित्य में मौलिकता, संवेदनशीलता और भाषा की परिपक्वता के लिए जाना जाता है। उनके साहित्य में भारतीय समाज की जटिलताओं, आंतरिक द्वंद्वों और बदलते मूल्यों का सजीव चित्रण देखने को मिलता है। ग्रामीण जीवन की सहजता हो या शहरी समाज का बनावटी तनाव उनकी रचनाओं में गहराई के साथ उपस्थित होता है। उन्होंने अपने साहित्य में केवल कथा नहीं गढ़ी बल्कि समाज का यथार्थ प्रतिबिंबित किया है।

गोविंद मिश्र का जन्म 1 अगस्त 1939 को उत्तर प्रदेश के बांदा जिले के अतर्रा कस्बे में हुआ। प्रारंभिक शिक्षा के उपरांत उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में स्नातकोत्तर किया। अध्ययन के बाद उन्होंने भारतीय राजस्व सेवा से जुड़े और एक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में देश की सेवा की। वह केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के अध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहे। उन्होंने सरकारी सेवा में रहते हुए भी हिंदी साहित्य से जुड़ाव बनाए रखा और लेखन को कभी बाधित नहीं होने दिया। यह उनके समर्पण, अनुशासन और साहित्य के प्रति निष्ठा का प्रमाण है।



गोविंद मिश्र की साहित्यिक यात्रा की शुरुआत 1969 में 'वह अपना चेहरा' उपन्यास से हुई। यह उपन्यास हिंदी कथा साहित्य में एक ताजगी लेकर आया। इसके बाद उन्होंने 'लाल पीली जमीन', 'पार उतरना धीरे से', 'धूल पौधों पर', 'सांप और सीढ़ी' जैसे कई उल्लेखनीय उपन्यासों की रचना की। उपन्यास 'धूल पौधों पर' में लेखक ने वैश्वीकरण के प्रभावों, मध्यवर्गीय असंतोष और सांस्कृतिक उथल–पुथल को दर्शाया है। इस उपन्यास से उन्हें विशेष रूप से नोटिस किया गया। इसी रचना के लिए उन्हें 2013 में सरस्वती सम्मान से सम्मानित किया गया। वह हिंदी के उन गिने. चुने लेखकों में से हैं जिन्हें यह गौरव प्राप्त हुआ। उनके अब तक 13 उपन्यास, 11 कहानी संग्रह, 5 यात्रा वृत्तांत और दो कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। इसी के साथ अनेक निबंध और आलोचनात्मक लेख प्रकाशित हैं। उनके यात्रा वृत्तांतों में केवल स्थलों का भौगोलिक विवरण नहीं मिलता बल्कि वह लेखन के माध्यम से संसार की अंतर्दृष्टि, मनोवैज्ञानिक विवेचन और सांस्कृतिक अनुभवों से समृद्ध होते हैं। उनके लेखन की एक और विशेषता है कि वह भाषा की सजगता और कथ्य की स्पष्टता को बराबरी से निभाते हैं।

गोविंद मिश्र ने साहित्य को कभी दायित्व से अलग नहीं देखा। वह मानते रहे कि लेखक केवल कल्पना का वाहक नहीं होता बल्कि वह समाज की अंतःचेतना का संवाहक होता है। यही कारण है कि उनकी कहानियों और उपन्यासों में पाठकों को न केवल कथा मिलती है बल्कि विचार, संवेदना और आत्ममंथन की प्रक्रिया भी विकसित होती है।

अमर उजाला शब्द सम्मान के तहत दिया गया आकाशदीप सम्मान उनके दीर्घकालीन साहित्यिक जीवन की सार्थकता को प्रमाणित करता है। यह सम्मान केवल उनके लिए एक व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है बल्कि यह हिंदी साहित्य जगत के लिए भी एक प्रेरणादायी क्षण है। उनके सम्मान से युवा रचनाकारों को संदेश मिला है कि साहित्य सेवा और सतत सृजन शीलता से किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त की जा सकती है। वह रिटायर होने के बाद भी सक्रियता से लेखन में संलग्न हैं। वह आज भी साहित्य को सामाजिक चेतना का सशक्त माध्यम मानते हैं और मानवीय मूल्यों के पक्षधर हैं।

फाउंडेशन का प्रयास है–बच्चे खेलें और जिंदगी में बदलाव लाएं

सर, आपको कहां से प्रेरणा मिली कि आपने 'दिल से खेलो फाउंडेशन' संस्थान शुरू करने का फैसला किया?

जब मैं टीच फॉर इंडिया नाम के एक ऑर्गनाइजेशन की फेलोशिप कर रहा था, उस दौरान 2021 में मुझे संगम विहार कम्युनिटी में दो साल काम करने का मौका मिला। उस समय कोरोना का दौर चल रहा था और मुझे यह एहसास हुआ कि बच्चों को खेल खेलने का अवसर नहीं मिल रहा है। स्कूल तो जा रहे थे, लेकिन सिर्फ क्लास रूम तक सीमित थे। अगर खेल भी रहे थे तो कागज की बॉल या बोतल से। मैं खुद एक सरकारी स्कूल से पढ़ा हूं तो बच्चों की यह स्थिति देखकर एक गहरा कनेक्शन महसूस हुआ, क्योंकि यही सब मैंने भी अपने स्कूल टाइम में झेला था। तब मुझे लगा कि स्कूल के अंदर ही कुछ ऐसा बनाना चाहिए जिससे बच्चों की जिंदगी में बदलाव आए और उन्हें खेलने का मौका मिल सके। फिर मैंने रिसर्च की, पता किया कि सरकार इस दिशा में क्या कर रही है, क्या विकल्प हैं। तब समझ में आया कि बच्चों के पास अवसर नहीं हैं। एक स्कूल की क्षमता पांच–छह सौ बच्चों की है, लेकिन वहां दो हजार बच्चे पढ़ रहे थे। ऐसे में खेल की सुविधाएं मिलना मुश्किल था। तभी यह महसूस हुआ कि कुछ अलग करना होगा ताकि बच्चों को स्कूल में खेलने का मौका मिले और उनका शारीरिक विकास हो सके, जो कि शिक्षा से भी ज्यादा जरूरी है।

यहीं से 'दिल से खेलो फाउंडेशन' की शुरुआत हुई। शुरुआत में यह सिर्फ एक प्रोजेक्ट था। हमने नहीं सोचा था कि यह एक संस्था बनेगी, लेकिन यह एक ऐसी समस्या को हल कर रही थी जो हर बच्चे के लिए महत्वपूर्ण थी। खासकर छोटे बच्चों के लिए, जिनके लिए मूवमेंट जरूरी है। हमने सबसे पहले स्कूल के अंदर खेल की कक्षाओं को नियमित बनाने पर काम किया। फिर कुछ लोगों से फंडिंग, इक्विपमेंट और ट्रेनर्स के लिए बात की। शुरुआत में मेरे पास कुछ भी नहीं था। बस एक कोशिश थी कि कैसे लोगों से जुड़कर बच्चों को ये सुविधाएं दिलाई जाएं। हमारा बस एक ही मकसद था कि बच्चों को खेल से जोड़ना और खेल संस्कृति को स्कूलों में विकसित करना।

दिल से खेलो फाउंडेशन से अभी तक कितने बच्चे जुड़ चुके हैं ?

अब तक हम करीब 1200 विद्यार्थियों के साथ सीधे काम कर चुके हैं और अपरोक्ष रूप से हमने दस हजार से ज्यादा बच्चों को प्रभावित किया है। उन इवेंट्स के जरिए जो हम बच्चों के लिए आयोजित करते हैं। छोटे बच्चों के लिए अक्सर नेशनल या इंटरनेशनल लेवल पर कंपटीशन नहीं होते। खासकर 9, 10, 11 साल की उम्र के बच्चों के लिए। इसलिए हमने कुछ नेशनल लेवल की प्रतियो. गिताएं शुरू कीं ताकि इस एज ग्रुप के बच्चे भी आगे आकर प्रतिभाग कर सकें। इसके अलावा जो भी प्रोग्राम हम स्कूल और कम्युनिटी के अंदर चलाते हैं, उनके जरिए भी हम विद्यार्थियों तक पहुंच बना पाए हैं। साथ ही पिछले दो–तीन सालों में हमने 30 से ज्यादा युवाओं को प्रशिक्षित किया है। उन युवाओं को अलग–अलग स्कूलों और कॉलेजों में प्लेसमेंट भी दिलाया है ताकि वे भी इस मिशन का हिस्सा बन सकें।

इतने बच्चों के लिए आपके पास एक पूरी टीम होगी। इस तरह आपके संस्थान में कितने सदस्य कार्य कर रहे हैं?

अभी दस हजार बच्चे हमारे इवेंट में हिस्सा लेते हैं। हम डायरेक्टली बच्चों के साथ भी काम कर रहे हैं। अभी हमारे पास करीब 1200 बच्चे हैं, जो अलग–अलग स्कूलों से हैं। इस तरह अभी हमारे पास 15 कैप्टन हैं। जितने लोग काम करते है उन्हें हम कैप्टन बोलते हैं। वह एक तरह से प्रशिक्षक होते हैं, जो अलग–अलग स्कूल में जाकर फिजिकल एजुकेशन टीचर के रूप में काम करते हैं। इसके अलावा हमारी टीम में 12 और लोग हैं जो अलग–अलग विभाग मैनेज करते हैं। कोई प्रोग्राम देखता है। कोई एचआर डिपार्टमेंट देखता है। कोई इवेंट मैनेजमेंट देखता है।

आप संस्थान में ऐसे कौन से तरीके अपनाते हैं कि जिससे हाशिए के समाज के बच्चे संस्थान से जुड़ सकें।



पिछले दिनों दिल से खेलो फाउंडेशन के संस्थापक *प्रशांत* राम लाल आनंद महाविद्यालय (दिल्ली विश्वविद्यालय) के सामुदायिक रेडियो तरंग 90.0 एफएम के मेहमान थे। इस दौरान हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार की छात्रा *श्वेता सिंह* ने उनके संगठन से जुड़े कामकाज के बारे में बातचीत की। उन्होंने स्कूल व कम्युनिटी के बच्चों के लिए संगठन द्वारा किए जा रहे काम के बारे में विस्तार से बताया। उस बातचीत के चुनिंदा अंश 'कैम्पस कनेक्ट' के पाठकों के लिए यहां पेश हैं...

TARANG 90.0 FM

सबसे पहली बात यह है कि हम कम्युनिटी के अंदर काम करते हैं, क्योंकि हमारा उद्देश्य सिर्फ खेल नहीं, बल्कि असली इंपैक्ट क्रिएट करना है। हम बच्चों की जिंदगी में कुछ जोड़ना चाहते हैं। हमारा मानना है कि खेल के जरिए बच्चे सिर्फ शारीरिक नहीं बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी विकसित होते हैं। हमारा फोकस खेल में लाइफ स्किल्स को इंटीग्रेट करने पर है। जब कोई बच्चा खेल के जरिए यह सीखता है कि टीम में कैसे सहयोग करना है तो वह स्किल क्लासरूम, घर और जिंदगी के दूसरे हिस्सों में भी काम आती है। यही सोचकर हमने एक स्पोर्ट्स इंटीग्रेटेड लाइफ स्किल एकेडमी की शुरुआत की है। हम खेल को इतना फन और एंगेजिंग बनाने की कोशिश करते हैं कि बच्चे खुद बार–बार उसमें हिस्सा लेना चाहते हैं। हम अभिभावकों को भी इन आयोजनों में आमंत्रित करते हैं ताकि वे भी खेल के प्रति सकारात्मक नजरिया अपनाएं और बच्चों को प्रोत्साहित करें। इसके अलावा हम बाहर से विशेषज्ञों को भी बुलाते हैं। जैसे–टीच फॉर इंडिया के कैप्टन, जो बच्चों के साथ सेशन करते हैं। उन्हें वेल बीइंग, मेंटल हेल्थ और जीवन की दूसरी जरूरी बातों पर एक्सपोजर देते हैं। हमारे पास नेटवर्क की सुविधा है, जिससे हम ऐसे बच्चों तक भी पहुंच पाते हैं, जिन्हें आम तौर पर कम्युनिटी से बाहर जाने का मौका नहीं मिल पाता। इस तरह बच्चे न सिर्फ खेलते हैं बल्कि सीखते हैं। बातचीत करते हैं। इसी के साथ वे अपने अंदर जरूरी स्किल्स डेवलप करते हैं वो भी एक सकारात्मक और सुरक्षित वातावरण में।

सर, अभी तक आपने इस एनजीओ के माध्यम से जितने भी बच्चों को खेल से संबंधित शिक्षा दी है। उसमें से कितने ऐसे बच्चे हैं जो इंटरनेशनल लेवल पर खेल चुके हैं?

हमारा फोकस अभी तक ज्यादातर लाइफ स्किल्स बिल्डिंग पर रहा है। हम सिर्फ तीन सालों से काम कर रहे हैं और अभी उतनी गहराई से टेक्निकल स्पोर्ट्स में नहीं जा पाए हैं। फिर भी जिन बच्चों ने हमारे साथ प्रशिक्षण लिया है, उनमें से कई ने जिला स्तर तक परफॉर्म किया है। एक उदाहरण है प्रियांशु का, जो एक सरकारी स्कूल का छात्र था और 'दिल से खेलो फा. उंडेशन' से जुड़ा हुआ था। हमने उसकी शुरुआत लाइफ स्किल्स से की, फिर धीरे–धीरे टेक्निकल स्किल्स पर फोकस किया। नतीजा यह रहा कि उसने जैवलिन थ्रो में नेशनल लेवल का कम्पटीशन क्रैक किया और दिल्ली में सेकंड पोजीशन हासिल की। यह हमारे लिए एक बड़ी उपलब्धि थी। दूसरी बड़ी उपलब्धि प्रशिक्षक से जुड़ी है। एक कैप्टन इंदिरा गांधी फिजिकल एजुकेशन एंड स्पोर्ट्स साइंस कॉलेज से पढ़ रहे थे। हमने उन्हें प्रॉपर ट्रेनिंग दी कि स्कूल में बच्चों को कैसे पढ़ाना है, कैसे उन्हें मैनेज करना है। अभी हाल ही में उनकी कैंब्रिज स्कूल में फिजिकल एजुकेशन टीचर के रूप में नियुक्ति हुई है। ऐसे कई कैप्टन हैं जो आज इन्फ्लुएंसर बन चुके हैं। कुछ स्कूलों में पढ़ा रहे हैं और एक कैप्टन तो अब कविता भी पढ़ाते हैं। यानी हमने न सिर्फ बच्चों के लिए, बल्कि यंग प्रोफेशनल्स के लिए भी एक सशक्त रास्ता तैयार किया है।

फाउंडेशन शुरू करने के दौरान आपके सामने कौन सी चुनौतियां आईं, अभी क्या स्थिति है, उसके बारे में बताइए।

चुनौतियां तो बहुत सारी थीं, क्योंकि हमने इस प्रोजेक्ट की शुरुआत एक कॉलेज प्रोजेक्ट की तरह की थी। हमारे पास कोई फंडिंग नहीं थी। जब किसी काम के लिए संसाधन नहीं होते तो उसे शुरू करना और भी मुश्किल हो जाता है। खासकर खेल को दोयम दर्जे की चीज मानी जाती है। ऐसे में खेल को लेकर लोगों में जागरुकता लाना, उसे प्राथमिकता दिलाना, अपने आप में एक बड़ा चैलेंज था। हमने देखा कि लोगों के मन में बचपन से ही यह धारणा बनी होती है कि 'खेलोगे कूदोगे तो बनोगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब।' इस सोच को बदलना, पेरेंट्स को कन्वेंस करना कि खेल बच्चों की लाइफ में क्यों जरूरी है इसके लिए हमने कई सारे इंटरेक्शन और वर्कशॉप आयोजित की।

अभिभावकों को हमने यह समझाने की कोशिश की कि आज के समय में बच्चों का फिजिकल डेवलपमेंट बहुत प्रभावित हो रहा है। बच्चे फोन में लगे रहते हैं। छोटे–छोटे बच्चों को भी चश्मा लग जाता है क्योंकि वे बाहर खेल ही नहीं रहे। दूसरी बड़ी चुनौती थी कि जब हमारे पास फंड नहीं थे तो हम संसाधन कैसे जुटाएं। बच्चों को कैसे मौके दें। खेल को कैसे व्यावसायिक रूप दें। हमारे पास एक मजबूत डिजाइन और विजन था। इसी के दम पर हमने अलग–अलग संस्थाओं से संपर्क किया। पहले कुछ छोटे फंड्स आए। फिर हमने बजाज भारत जैसी संस्थाओं से इक्विपमेंट मंगवाए। कॉलेज के स्टूडेंट्स से भी हमने जुड़ाव बनाया। हमने कॉलेजों का रीच आउट किया कि उनके फिजिकल एजुकेशन स्टूडेंट्स को हम इंटर्नशिप का मौका देंगे। इस तरह की अनेक योजनाओं पर हम काम कर रहे हैं। इसका लाभ बच्चों को ही मिलना है।

लोक संस्कृति और सुरों से सजा विरासत उत्सव

खुशी वशिष्ठ/योगेश प्रताप

नई दिल्ली। समाज के लिए कार्य करने के लिए किसी गैर सरकारी संगठन का हिस्सा बनना आवश्यक नहीं है। आप स्वयं एक संगठन हैं। अपने श्रम, समय और सोच के माध्यम से बदलाव ला सकते हैं। जहां–जहां नदियां आईं, वहां–वहां परिवर्तन हुआ। किसी स्थान पर सकारात्मक बदलाव लाने के लिए वहां उपस्थित होना ही पर्याप्त हो सकता है। यह विचार देवेंद्र कुमार गुप्ता ने 18 मार्च 2025 को राम लाल आनंद महाविद्यालय के स्पिक मैके सांस्कृतिक उत्सव 'विरासत' में रखे। देवेंद्र कुमार लाडली फाउंडेशन के संस्थापक एवं संयुक्त राष्ट्र आर्थिक और सामाजिक परिषद के विशेष परामर्शदाता हैं। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि संस्कृति के प्रति संवेदनशील होना आवश्यक है, क्योंकि वही हमें समाज और देश के प्रति संवेदनशील बनाएगी। उन्होंने कहा कि समानता सोच में होनी चाहिए, मात्र संख्यात्मक बराबरी ही पर्याप्त नहीं है। आपको सबसे पहले अपनी नजरों में सकारात्मक बनने की आवश्यकता है। इसके लिए केवल प्रेरित करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उस कार्य का प्रभाव भी मापा जाना चाहिए। अपने सामाजिक अभियानों का जिक्र करते हुए उन्होंने सुविधा संपन्न और वंचित वर्गों के बीच की खाई को पाटने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम के दौरान स्पिक मैके के सलाहकार प्रो. राकेश कुमार, समिति संयोजक डॉ. दीप्ति भारद्वाज, सह संयोजक डॉ. शची मीणा, प्रो. वंदना गंडोत्रा, डॉ. रीटा जैन, हिंदी पत्रकारिता के प्रो. राकेश कुमार सहित अनेक शिक्षक मौजूद रहे। स्पिक मैके की विरासत श्रृंखला में एक सप्ताह तक चलने वाले महोत्सव में भारत की विविध और समृद्ध कलाओं का अनूठा संगम देखने को मिला। पांच दिन की इस श्रृंखला में चौथे दिन सरोद वादक पंडित पार्थो सारथी ने अपनी अनुपम प्रस्तुति दी। उनका साथ मशहूर तबला वादक आशीष पॉल ने दिया।



राम लाल आनंद महाविद्यालय के स्पिक मैके उत्सव 'विरासत' में लाडली फाउंडेशन के संस्थापक देवेंद्र कुमार गुप्ता ने भारतीय संस्कृति पर बात की।



राजेंद्र गंगानी की प्रस्तुति।

संगीत–नृत्य अंतरिक्ष में ले जाता है...

नंदनी

नई दिल्ली। हमारी कलाएं हमारी धरोहर और विरासत हैं। यह बात प्रसिद्ध कलाकार राजेंद्र गंगानी ने 19 मार्च को विरासत महोत्सव की कथक संध्या में कही। उन्होंने कहा कि संगीत और नृत्य हमें अंतरिक्ष में ले जाता है। हम वह करते हैं जो हम खुद नहीं जानते। यह बात कहते हुए राजेंद्र गंगानी ने सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण के महत्व पर बात की। इसके बाद मुख्य अतिथि राजेंद्र गंगानी ने अपनी कथक कला का प्रदर्शन किया। राजेंद्र गंगानी के साथ उनके सह कलाकारों के रूप में विनोद गंगानी, किशोर गंगानी, दीप्ति गुप्ता और रवि शंकर शर्मा ने स्वरों और वाद्य यंत्रों पर उनका साथ दिया।

राजस्थानी लोक गीत में खो गए श्रोता

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राजस्थानी लोक संगीत की संध्या 20 मार्च को सजी। उस्ताद अनवर खान लांगा और उनकी टीम ने अपनी गायकी से लोगों को बांध लिया। आयोजन की शुरुआत महादेव और कृष्ण पर केन्द्रित भजन से हुई। इसी कड़ी में कलाकारों ने ढोला थारे देश में...सूफी गीत दमादम मस्त कलंदर..जैसे गीतों को पेश किया, जिस पर मौजूद लोगों ने तालियों से उनका उत्साह बढ़ाया। कलाकारों में उस्ताद अनवर खान, मोहम्मद रफीक, जाकिर खान, यासीन खान, असलम खान, मोसिन खान, अरमान आदि शामिल थे। इससे पहले प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, स्पिक मैके के सलाहकार प्रो. राकेश कुमार ने कलाकारों का स्वागत किया।

हेरिटेज वॉक ने विरासत से जोड़ा

अंशिका वर्मा

नई दिल्ली। इतिहास तारीखों के बारे में नहीं बल्कि इतिहास तो उस समय की संस्कृति, समाज, पहनावा, खान–पान, बोली आदि के बारे में बताता है। यह बातें गाइड शुमायला ने हुमायूं संग्रहालय में हेरिटेज वॉक के दौरान बताई। स्पिक मैके समिति ने सांस्कृतिक सप्ताह विरासत 2025 के तहत 22 मार्च को सुंदर नर्सरी और हुमायूं संग्रहालय की हेरिटेज वॉक करवाई। शुमायला ने हेरिटेज वॉक के दौरान हुमायूं के जीवन के सफरनामे के बारे में बताया। इस हेरिटेज वॉक में महाविद्यालय के सभी विभागा के विद्यार्थी शामिल हुए। स्पिक मैके की संयोजिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज ने शुमायला का धन्यवाद किया।

सिनेमा को बनाया रचनात्मकता का केंद्र

नंदनी

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की अंग्रेजी रचनात्मक समिति अभिव्यक्ति ने 27 फरवरी को क्लासिक बॉलीवुड मूवीज विषय पर आधारित एक रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता रखी।

यह प्रतियोगिता तीन चरणों में कराई गई, जिसमें ऑडियो से विजुअल तक का समावेश रहा। प्रथम चरण में प्रतिभागियों को लोकप्रिय बॉलीवुड फिल्मों के कुछ प्रसिद्ध डायलॉग सुनाए गए, जिसके आधार पर उन्हें पत्र लिखकर अपनी कल्पनाओं को शब्दों में पिरोना था। दूसरे चरण में उन्हें कुछ प्रसिद्ध फिल्मों के पोस्टर दिखाए गए, जिनके आधार पर उन्हें एक लघु कथा लिखकर अपनी रचनात्मकता का परिचय देना रहा। तीसरे चरण में कुछ प्रसिद्ध फिल्मों के दृश्य दिखाए गए, जिसके आधार पर प्रतिभागियों ने कविता लिखने के साथ उसका पाठ किया।

प्रतिभागियों ने अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन करते हुए बॉलीवुड के संवादों और दृश्यों को कहानियों में शामिल किया। प्रतियोगिता में शहीद भगत सिंह महाविद्यालय से समृद्धि उपाध्याय ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। दूसरा और तीसरा स्थान क्रमशः आरएलएसी से ईशान दुबे और स्निग्धा ने प्राप्त किया। राम लाल आनंद महाविद्यालय से सृजया बनर्जी और इंद्रप्रस्थ महाविद्यालय फॉर वूमेन से महक यादव को विशेष प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।

प्रतियोगिता से सभी प्रतिभागियों को इस क्षेत्र में बहुत कुछ जानने और सीखने को मिला। इस प्रतियोगिता दौरान समिति की संयोजिका डॉ. दीप्ति भारद्वाज, डॉ. ऋतु वत्स और डॉ. मीनाक्षी ब्रह्म मौजूद रहीं।

टेरेक्स में विज्ञान व कला का संगम



टेरेक्स के वार्षिकोत्सव में महासागरीय जलवायु से संबंधित विषय पर डॉ. अनिल जोशी ने रखे विचार।

भारती बल

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की द जियोलॉजिकल समिति टेरेक्स ने अपने वार्षिक उत्सव वशांख 25 में कई अंतर महाविद्यालय प्रतियोगिताएं रखीं। इसमें वक्ता सत्र के साथ क्विज प्रतियोगिता, रॉक पेंटिंग प्रतियोगिता, मिनरल्स, रॉक्स और फॉसिल एग्जीबिशन शामिल थीं। वक्ता सत्र में मुख्य अतिथि के तौर पर प्रो. देवेश सिन्हा और डॉ. अनिल जोशी मौजूद रहे।

डॉ. अनिल जोशी ने महासागरीय जलवायु से संबंध, अतीत में अचानक और क्रमिक जलवायु परिवर्तन, भविष्य के लिए सबक लेने जैसे मसलों पर चर्चा की।

देवेश सिन्हा ने बताया कि पहले डीएनए या आरएनए कुछ भी नहीं खोजा गया था। साल 1953 के बाद डीएनए की खोज हुई। अब डीएनए की मदद से इवोल्यूशन को पीछे से फिर से देखा जा सकता है।

जलवायु परिवर्तन केवल ग्रीन हाउस गैसों की वृद्धि, ग्लोबल वार्मिंग का बढ़ना या बर्फ की ढाल का पिघलना ही नहीं है। क्विज प्रतियोगिता में अलग अलग महाविद्यालयों से लगभग 78 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसमें प्रथम स्थान पर गौरव कुमार, दूसरे स्थान पर कार्तिकेय, तीसरे स्थान पर पीयूष रहे। रॉक पेंटिंग में 60 विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया। विद्यार्थियो ने अपनी प्रतिभा से रॉक पेंटिंग की। इसमें मिनरल्स, रॉक्स, फॉसिल एग्जीविशन में मिनरल्स, रॉक्स और फॉसिल के बारे में विद्यार्थियो को समिति के सदस्यों ने जानकारी दी। समारोह के दौरान प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता, प्रभारी शिक्षक डॉ. रवीश लाल, समिति की संयोजिका सुश्री पूजा यादव सहित अनेक शिक्षक और विद्यार्थी मौजूद रहे।

कस्टमर की चाह और मांग पर ध्यान दें

अंशिका वर्मा

नई दिल्ली। कस्टमर की जरूरत, चाह और मांग की अवधारणा को समझें। मार्केटिंग के लिए ये तीनों बातें समझने के बाद ही कस्टमर को प्रभावित कर सकते हैं। मार्केटिंग के समय अधिकता के बजाय हमें अपना उत्पाद अनुकूल बनाना है। यह बात डॉ. लोकेश जिंदल ने राम लाल आनंद महाविद्यालय के कॉमर्स विभाग की कॉचिंग समिति की ओर से 27 फरवरी को फेस्टिवल ऑफ मार्केटिंग नामक आयोजन में कही।

मार्केटिंग विषय पर विस्तार से चर्चा करते हुए डॉ. लोकेश ने कहा कि आज के युग में कस्टमर ही सफलता की कुंजी है। उन्होंने समझाया कि एक बाजारकर्ता को उपभोक्ता को समझना आवश्यक है, जिनमें समस्याओं के समाधान, संतुलन बनाए रखने की क्षमता और संतुष्टि जैसे महत्वपूर्ण पहलू शामिल होते हैं। इस अवसर पर बी.कॉम. के विद्यार्थियों के साथ अन्य विभागों के विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी ने मार्केटिंग से जुड़े सवाल भी पूछे। इससे पहले विभाग की डॉ. प्रीति ने वक्ता का स्वागत किया तो अंत में समिति के अध्यक्ष सक्षम टंडन ने मुख्य वक्ता सहित सभी का धन्यवाद ज्ञापन किया। इस दौरान कॉमर्स विभाग की प्रभारी डॉ. नूपुर साबू, डॉ. शिखा मक्कर, राजेन्द्र सिंह, कृष्ण कुमार शामिल रहे।



कैम्पस कनेक्ट के अप्रैल अंक का विमोचन

हर अंक पढ़ने में बेहतर होता जा रहा है:प्राचार्य

कैम्पस संवाददाता

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय के हिंदी पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग की ओर से निकाले जा रहे मासिक ई–न्यूज लेटर 'कैम्पस कनेक्ट' का अप्रैल अंक प्रकाशित हो गया है, जिसका विमोचन 1 मई 2025 को महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता और हिंदी पत्रकारिता विभाग के संयोजक प्रो. राकेश कुमार ने किया।

विमोचन की औपचारिकता अंक की संपादक द्वितीय वर्ष की छात्रा श्वेता सिंह ने निभाई। विमोचन के साथ ही प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने अंक को निहारते हुए कहा कि अप्रैल अंक देख कर लगता है कि आप समाचार पत्र पढ़ रहे हैं। प्राचार्य की इस बात पर प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने बताया कि सर आपके सुझावों पर अमल करते हुए हमारी संपादकीय टीम हर अंक को बेहतर करने की दिशा में काम कर रही है।

इसी संदर्भ में प्राचार्य का कहना था कि जब मन से कम होता है तो बे. हतरी की ओर ले जाता है। यह काम बच्चे कर रहे हैं यह देखकर अच्छा लगता है। इसी के साथ उन्होंने अंक की संपादक श्वेता सिंह से बात कर और भी बेहतर ढंग से काम सीखने की बात कही।

विद्यार्थियों ने आरएलएसी का नाम रोशन किया





वाद विवाद में जीत दर्ज करने वाले आलोक और सक्षम को प्राचार्य ने बधाई दी (बाएं)। खेल मंत्रालय ने आदर्श सिंह को सम्मानित किया (दाएं)।

जया सिंह

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल महाविद्यालय में 22 फरवरी से 24 फरवरी तक के तीन दिन अलग तरह के थे। इन दिनों को और खास बना दिया राम लाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थियों की ऐतिहासिक जीत ने। किरोड़ीमल कॉलेज में 1991 से नरेंद्र सिंह प्रधान स्मृति संसदीय वाद विवाद प्रतियोगिता का आयोजन होता रहा है। यह एशिया की सबसे पुरानी हिंदी वाद विवाद प्रतियोगिता के नाम से जानी जाती है। इसके 34वें संस्करण में राम लाल आनंद महाविद्यालय के विद्यार्थी आलोक राज और सक्षम कुमार ने प्रथम पुरस्कार हासिल किया। यह पहली बार है जब राम लाल आनंद महाविद्यालय के किसी विद्यार्थी दल ने संसदीय वाद विवाद में प्रथम स्थान हासिल किया है। दोनों विद्यार्थी हिंदी वाद विवाद समिति आरोह के मुख्य सदस्य हैं।

किरोड़ीमल की हिंदी वाद विवाद समिति ने इस प्रतियोगिता का आयोजन किया। सभी महाविद्यालयों की टीमों ने इसमें भाग लिया। कई चरणों मे हुई प्रतियोगिता में 42 दलों ने भाग लिया। अंत में दो दलों ने प्रथम स्थान के लिए मुकाबला किया, जिसमें आलोक राज और सक्षम कुमार के दल ने बाजी मारी। शहीद भगत सिंह इवनिंग कॉलेज के शुभांग दुबे और माधव गौतम का दल उप. विजेता रहा। राम लाल की आरोह समिति के संयोजक डॉ. रोशन लाल मीणा के नेतृत्व में विजेता विद्यार्थी और आरोह समिति के सदस्य महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता से मिले। प्राचार्य ने टीम को बधाई देते हुए आगे भी इसी तरह बेहतर प्रदर्शन करने की बात कही।

आरएलएसी गौरव

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। भारत सरकार के युवा और खेल मंत्रालय ने नेहरू युवा केंद्र संगठन की ओर से आदर्श प्रताप सिंह को युवा संसद में सम्मा. नित किया। राज्य स्तर पर 31 मार्च को आयोजित विकसित भारत युवा संसद में राम लाल आनंद महाविद्यालय के आदर्श प्रताप सिंह ने अधिनिर्णायक सदस्य के रूप में भूमिका निभाई। वह महाविद्यालय के राजनीति विज्ञान के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी हैं।

आदर्श वाद–विवाद प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते रहे हैं। पिछले वर्ष एनआईटी कुरुक्षेत्र की ओर से आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय एमयूएन वाद विवाद प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया। कौशल और प्रतिभा को देखते हुए आदर्श को मंत्रालय की ओर से अधिनिर्णायक सदस्य के रूप में आमंत्रित किया गया। महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने आदर्श की इस उपलब्धि पर खुशी जाहिर की। प्राचार्य ने एक अप्रैल को आदर्श प्रताप सिंह को बधाई देते हुए कहा कि युवा संसद में आपको चुनना महाविद्यालय के लिए गर्व की बात है। आपको देखकर दूसरे विद्यार्थी प्रेरित होंगे। महाविद्यालय हर सम्भव विद्यार्थियों की मदद के लिए हमेशा तैयार है। आप खूब मेहनत करें और आगे बढ़ें।

युवा संसद के दौरान नेहरू युवा केंद्र संगठन दिल्ली के निदेशक लाल सिंह, विधायक रविकांत, अनिल गोयल और रविन्द्र नेगी ने आदर्श को सम्मानित किया। साथ ही चंडीगढ़ के रिटायर्ड डीजीपी संजय बेनीवाल, पूर्व आईएफएस अधिकारी और रिटायर्ड एंबेसडर अमृत लुगुन सहित अधिक बड़ी संख्या में विद्यार्थी मौजूद रहे।

उज्ज्वल भविष्य का संदेश देती हैं सुंदर कविताएं

खुशी प्रजापति

नई दिल्ली। आप जो लिखते हैं आपको नहीं पता वह कितना मूल्यवान है। दो लाइनों में आपकी पूरी संपदा है। उन लाइनों के बिना कोई भी भाषण अधूरा है। उनकी दौलत रह जाएगी महलों और चौबारों तक, तुम्हारे शब्द राज करेंगे चांद और सितारों पर। यह बात मुख्य अतिथि जगदीश मित्तल ने राम लाल आनंद महाविद्यालय की हिंदी रचनात्मक लेखन समिति अभिव्यक्ति, राजभाषा कार्यान्वयन समिति, हिन्दी साहित्य परिषद और राष्ट्रीय कवि संगम के संयोजन में हुई काव्य गोष्ठी में कही।

राष्ट्रीय कवि संगम के अध्यक्ष जगदीश मित्तल, संयोजक धर्मवीर गुर्जर और लिफाफा काव्य संग्रह के लेखक मनीष ने अपनी कविताएं विद्यार्थियों को सुनाई। साथ ही कविता, निबंध या किसी भी विधा में निरंतर लिखते रहने के लिए प्रेरित किया।

जगदीश मित्तल ने कहा कि कोशिश करते रहिए। निश्चित ही आने वाला कल आपका होगा। आप मौज मस्ती तक सीमित रहे तो आपको कल कोई याद नहीं करेगा। याद उसको ही किया जाता है जिसने अपनी जिंदगी में कुछ किया है। आपके कंधे पर इस देश का भविष्य है।

मोबाइल फोन के अधिक प्रयोग से सचेत करते हुए उन्होंने कहा कि उंगलियां ही निभा रही हैं रिश्ते। जुबा के पास समय ही कहां, सब टच में ही बिजी हैं, पर कोई टच में नहीं है। उन्होंने कहा कि विद्यार्थियों को अपने शिक्षक के टच में रहना चाहिए। उनसे ज्ञान की बातें सीखनी चाहिए। उमर छोटी है, पर मुकाम बड़ा हो। तू छोटा है, पर तेरा नाम बड़ा हो। इन दो लाइनों के साथ उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया। साथ ही युवाओं को जागरुक करने के लिए धर्मवीर ने रणवीर इलाहाबादिया का जिक्र करते हुए कहा कि इनके जैसे लोग युवाओं को गलत शिक्षा देते हैं, लेकिन यह आज की युवा पीढ़ी है जो आगे चल कर देश का विकास करेगी। गोष्ठी में महाविद्यालयों से आए विद्यार्थियों ने सहभागिता की। इस गोष्ठी में विद्यार्थियों ने अपने विचारों को कविताओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया।

कार्यक्रम के दौरान अभिव्यक्ति के संयोजक डॉ. मानवेश नाथ दास तथा सह–संयोजक डॉ. राजेश गौतम की उपस्थिति ने आयोजन को विशेष महत्व प्रदान किया। साथ ही, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की संयोजिका प्रो. अर्चना गौड़ की मौजूदगी ने साहित्यिक वातावरण में और भी गरिमा जोड़ दी। यह कार्यक्रम विद्यार्थियों के लिए न केवल रचनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम बना, बल्कि भाषा और भाव की शक्ति को महसूस करने का एक सुंदर अवसर भी सिद्ध हुआ।

संविधान निर्माण के मुद्दे पर विद्यार्थियों में बहस

संजीव राज

नई दिल्ली। समय 1947 का है। भारत अभी आजाद हुआ है और चुनौती है देश चलाने के लिए संविधान बनाने की। यह विषय इतिहास विभाग की तवारीख समिति ने अपने आयोजन के लिए चुना। इसमें विद्यार्थियों ने संविधान निर्माण पर चर्चा की।

24–25 फरवरी को राम लाल आनंद महाविद्यालय में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसकी शुरुआत कार्यकारी पैनल के सम्मान समारोह से हुई। निर्णायक की भूमिका अंशुल शर्मा (चेयर), समीर सिंह (क्राइसिस डायरेक्टर), कार्तिक त्यागी (वाइस चेयर) ने निभाई। इसमें विद्यार्थियों ने अर्थव्यवस्था, राजनीति, भाषा और भारत में विविधता को केंद्र में रखते हुए संविधान का निर्माण किया। मुख्य रूप से केंद्र सरकार–राज्य सरकार के रिश्ते एवं भाषा के आधार पर छूट पर खूब बहस हुई। इस बहस में अभिषेक मौर्य सर्वश्रेष्ठ प्रतिनिधि बने। खुशी कुमारी उच्च प्रशंसा के लिए चुनी गईं। आस्था मिश्रा को विशेष उल्लेख मिला। इस आयोजन से विद्यार्थियों को तर्कशक्ति और नेतृत्व कौशल विकसित करने में भी मदद मिली। कार्यक्रम में प्रो. राकेश कुमार, प्रो. राजीव कुमार, डॉ. कृष्ण गोपाल त्यागी, डॉ. पारुल गौड़, डॉ. विकास आनंद, डॉ. शची मीणा, डॉ. प्रतीक कुमार और डॉ. श्यामजीत यादव रहे। दर्शक के तौर पर भी विद्यार्थियों ने इस बहस में अपनी सहभागिता दिखाई।

विद्यार्थियों ने देशों का प्रतिनिधित्व किया

अमृत कुमार पाण्डेय

नई दिल्ली। राम लाल आनंद महाविद्यालय की अंग्रेजी वाद–विवाद समिति आवाज ने 22 फरवरी को अंतर महाविद्यालय वाद विवाद प्रतियोगिता रखी।

इसमें 2047 में होने वाले किसी काल्पनिक भौगोलिक संकट के प्रबंधन को विषय को आकार दिया गया। प्रतिभागियों ने समूह अथवा व्यक्तिगत रूप से विभिन्न देशों के रूप में अपने मत रखकर रखे। लोगों के सामने अपनी बात मजबूती से रखकर अपने पक्ष को मजबूत किया। इस प्रतियोगिता में कनाडा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। समिति के संयोजक ताहा यासीन और समिति की सह–संयोजक डॉ. सोमा पटनायक की मौजूदगी के साथ प्रतियोगिता का समापन हुआ।

मेले में 30 कंपनियों ने दिया प्लेसमेंट

दिव्या

नई दिल्ली। दिल्ली विश्वविद्यालय के राम लाल आनंद महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल पाथवे ने 24 मार्च 2025 को अपने वार्षिक इंटर्नशिप मेले माइलस्टोन 5.0 का आयोजन किया। यह वार्षिक इंटर्नशिप मेला है, जिसमें ट्रेडशाला, पहचान द स्ट्रीट स्कूल, करियर प्लान, स्टडी बादशाह समेत 60 से अधिक कंपनियों ने भाग लिया। इसमें दिल्ली विवि के विभिन्न महाविद्यालयों सहित अन्य शिक्षण संस्थानों के विद्यार्थी भी इंटर्नशिप का हिस्सा बने।

वार्षिक इंटर्नशिप मेले में कंपनियां ऑफलाइन के साथ ऑनलाइन भी जुड़ीं। इसमें डाटा एनालिसिस, ह्यूमन रिसोर्सेस, ट्रैवल एंड टूर, होटल मैनेजमेंट के साथ स्वयंसेवी संगठन भी शामिल रहे। इस कॅरिअर मेले में 10 साल पुरानी कंपनी से लेकर दो महीने पुरानी कंपनी तक ने भी भाग लिया। मेले से विद्यार्थियों के साथ कंपनियों को भी मार्केटिंग का अवसर मिला। कंपनियों ने विद्यार्थियों के इंटरव्यू लिए। इंटरव्यू दो चरणों में हुए। पहले चरण में विद्यार्थियों की रुचि और कौशल से संबंधित प्रश्न पूछे गए। फिर उन्हें शॉर्टलिस्टेड किया गया। अगले चरण में कंपनी ने अपनी प्राथमिकता से विद्यार्थियों का चयन किया। दो चरणों के बाद 30 कंपनियों ने विद्यार्थियों को नौकरी के अवसर प्रदान किए। इसमें ट्रेडशाला कंपनी ने 12 लाख की जॉब का पैकेज दिया। वहीं 22 हजार रुपए महीने की इंटर्नशिप का ऑफर दिया गया। मेले को प्राचार्य प्रो. राकेश कुमार गुप्ता ने भी निहारा। इस दौरान समिति के संयोजक डॉ. पवन कुमार, सहसंयोजक डॉ. सिद्धार्थ गुप्ता, डॉ. सुप्रिया और सुश्री सृजना उपस्थित रहीं।



महाविद्यालय में लगे रोजगार मेले विभिन्न कंपनियां ने हिस्सा लिया।

डीयू की पुष्प प्रदर्शनी ने सभी को आकर्षित किया

आयुष प्रजापति

नई दिल्ली। इस बार दिल्ली विश्वविद्यालय की पुष्प प्रदर्शनी में हथकरघा को केंद्र में रखा गया। विवि के गौतम बुद्ध शताब्दी उद्यान में 28 फरवरी को 67वीं पुष्प प्रदर्शनी में हथकरघा की खेती, प्रसंस्करण व बुनाई में टिकाऊ परम्परा के महत्व पर प्रकाश डाला गया।

पुष्प प्रदर्शनी में बोनसाई, कैक्टस और रसीले पौधे लगे हुए थे। विदेशी ऑर्किड और हर्बल पौधों ने भी प्रदर्शनी में लोगों को आकर्षित किया। पुष्प प्रदर्शनी में सबसे दमदार प्रदर्शन राष्ट्रपति भवन का रहा। साथ ही महाकुंभ मेले को प्रदर्शित करने वाली शानदार पुष्प प्रदर्शनी ने भी दर्शकों को लुभाया। महाकुंभ 2025 का बोर्ड सबसे बड़ा सेल्फी प्वाइंट बना।



दिल्ली विवि की पुष्प प्रदर्शनी में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत किया गया।

फुलकारी कारीगरों ने विभिन्न रेशों का उपयोग कर सुंदर फुलकारी रूपांकनों को बनाने के कौशल का प्रदर्शन किया। हथकरघा बुनकरों ने जूट, कपास और ऊन जैसे टिकाऊ रेशों का उपयोग करके बुनाई की कला का प्रदर्शन किया। प्राकृतिक रंगों का उपयोग कर रंगी साड़ियों सहित टिकाऊ वस्त्रों का क्यूरेटेड संग्रह प्रदर्शित किया गया। प्रतियोगिता में विभिन्न राज्यों का प्रतिनिधित्व करने वाले हथकरघा और अभिनव ड्रैपिंग शैली के सुंदर संयोजन को देखा गया। इसी के साथ एक अन्य प्रमुख हिट स्टॉल लगा था, जो उत्तर भारत की सात बहनों और भाई पर केंद्रित था। आठ राज्यों की पारंपरिक पोशाक का भी प्रदर्शन किया गया। सब्जी उद्यान, पौधों के स्टॉल ने खेती–किसानी से संबंध रखने वाले लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। पुष्प प्रदर्शनी में दिल्ली विश्वविद्यालय के कई महाविद्यालय, संस्थान और छात्रावास ने हिस्सा लिया। इसमें सबसे बेहतर प्रदर्शन करने वालों को पुरस्कार से नवाजा गया।

संरक्षक मंडल
प्राचार्य
प्रो. राकेश कुमार गुप्ता
विभागाध्यक्ष
प्रो. राकेश कुमार
परामर्शदाता
डॉ. अटल तिवारी
संपादक
राहुल गुप्ता/हर्षित
उपसंपादक
अंशिका वर्मा